विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

सार्वजनिक आरोप लगाने वाले का अपरिहार्य उत्तरदायित्व

अगले एक वर्ष तक हम गोस्वामी तुलसी और सनातन के आलोक में समकालीन जीवन तथा मानवीय मूल्यों पर एक गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे। इस विमर्श का महत्त्व अपने निजी आचरण और सार्वजनिक जीवन को सत्य, करुणा तथा न्याय आदि की कसौटी पर परखते हुए सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत को प्रतिष्ठित करने में है। श्रृंखला का स्वरूप तीर्थयात्राओं के दौरान पुष्पा और मेरे बीच होने वाले शास्त्रार्थ का रहेगा जिसमें तुलसी के वचनों और जीवन के अनुभवों के सहारे विचार की परतें खुलेंगी।

अयोध्या में कनकभवन और नागेश्वरनाथ के दर्शन करके हम राम की पैड़ी पर टहल रहे थे। पुष्पा ने पूछा, "ऊ नीम वाली बात याद है? सबने मोहन को आरा चलावत देखो, पेड़ से डाल काटत कौने देखो हतो?"

उस दिन पड़ोसी फोन लेकर आए थे। वीडियो में मोहन गिरी हुई हरी डाल के टुकड़े कर रहा था। नीचे लिखा था कि माली ने पेड़ की डाल काट डाली। मोहन ने बताया, डाल पहले से गिरी थी; चौकीदार ने रास्ता साफ करने को कहा था। पुष्पा ने ऊपर देखा। टूटने की जगह लंबी खपच्चियाँ और लटकती छाल थीं; नीचे आरे से कटे सिरों पर चिकनाहट थी। गीली मिट्टी में डाल गिरने की चौड़ी छाप पर नया बुरादा पड़ रहा था। चौकीदार ने भी पुष्टि की।

'काट रहा है' से 'काट दिया' तक पहुँचते हुए रास्ता साफ करता आदमी पेड़ का अपराधी हो गया था। वीडियो सही था; उसके नीचे लिखे वाक्य ने उसमें एक अप्रमाणित पिछली घटना जोड़ दी थी।

डाल के चिह्न और चौकीदार की बात साथ रखकर ही घटना का क्रम खुला था। डाल किस घड़ी, किस कारण टूटी, इतना तब भी निश्चित नहीं था। जितना समझ में आया, उसे कहने के लिए शेष अज्ञान छिपाना आवश्यक नहीं था।

मैंने कहा, '"मन्थरा की बातों में भी सही समाचार और गढ़ा हुआ संबंध मिलते हैं। राम का अभिषेक होने वाला है, भरत बाहर हैं; इससे वह कैकेयी के विरुद्ध षड्यंत्र समझाती है:"–

कहहिं झूठिफुरि बात बनाई। ते प्रिय तुम्हहिकरुइ मैं माई॥
(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 16 से पूर्व, चौपाई 2 का पूर्वार्ध; मन्थरा-कैकेयी संवाद।)
सजि प्रतीतिबहुबिधिगढ़ि छोली। अवध साढ़साती तब बोली॥
(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 17 से पूर्व, चौपाई 2 का उत्तरार्ध; मन्थरा का वर्णन।)

'सजि प्रतीति' में विश्वास पैदा करने का उद्योग है। कथन अपनी कटुता को निष्ठा का प्रमाण बनाता है। सुनने वाले को संशय करना भी अपने हितैषी का अपमान लग सकता है।

तुलसी 'अवध' कहते हैं। बात दो व्यक्तियों में हो रही है, किंतु उसका फल पूरे नगर को भोगना है। निजी विश्वास जब निर्णय बनता है, उसकी पहुँच बोलने-सुनने वालों से बहुत आगे जाती है। मोहल्ले का संदेश भी मोहन के उन नियोक्ताओं तक पहुँच सकता था जिन्होंने घटना देखी नहीं थी।

"पर पड़ोसी तौ खुदई भरम गए हते। उनखों मन्थरा काहे बना रए हो?"

"सही टोका। जानबूझकर भ्रम रचना और स्वयं भ्रमित होना अलग हैं। भली नीयत से भी गलत आरोप लग सकता है।"

पुष्पा को कैकेयी का आरम्भिक उत्तर याद था:–

प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें। तिन्हकें तिलक छोभु कस तोरें॥
(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 15 से पूर्व, चौपाई 4 का उत्तरार्ध; कैकेयी-मन्थरा संवाद।)

"भरत को अहित हो जैहै, ई डर बैठो तौ बरसन की प्रीति पै संदेह होन लगो, पुष्पा बोलीं।"

अनिष्ट हुआ नहीं था; उसकी आशंका पुराने स्नेह का अर्थ बदल रही थी। अपने प्रिय व्यक्ति, धर्म या समुदाय की चिंता स्वाभाविक है। वही चिंता किसी तीसरे के अपराध का प्रमाण कैसे हो जाएगी?

सत्य बचन मानस बिमल कपट रहित करतूति।
तुलसी रघुबर सेवकहि सकै न कलिजुग धूति॥
(दोहावली, दोहा 87; रामसेवक के मन, वचन और कर्म की संगति।)

"यहाँ सत्य बोलने के साथ मन की निर्मलता और निष्कपट कर्म हैं", मैंने कहा–"हमारे प्रसंग में इससे अपनी नीयत और आचरण जाँचने की प्रेरणा मिलती है। निष्कपट होने से किसी की जानकारी अपने आप पूरी नहीं हो जाती।"

"जैसे तुमखों लगत है हमाई बात पूरी हो गई, अउ हम कहत रह जात हैं!"

मैंने अगला उत्तर रोक लिया। पुष्पा ने हँसकर आगे बोलने की छुट्टी दी। पैड़ी पर उतरते यात्रियों को निकल जाने देकर हम फिर चल पड़े।

"अयोध्या में सत्य की कठिन परीक्षा वचनपालन है। कैकेयी ने वर माँगे भी नहीं हैं और दशरथ कह रहे हैं":–

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रानजाहुँबरुबचनु न जाई॥
निहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा॥
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए। बेदपुरानबिदित मनु गाए॥
(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 28 से पूर्व, चौपाई 2 उत्तरार्ध और चौपाई 3; दशरथ-कैकेयी संवाद।)

वचन दूसरे के मन में भरोसा उत्पन्न करता है; उसे सुविधानुसार छोड़ना उस भरोसे को चोट पहुँचाना है। लेकिन कैकेयी उसी सत्यप्रतिष्ठा को अपने आग्रह का साधन बनाती हैं:–

सत्य सराहिकहेहुबरु देना। जानेहुलेइहिमागिचबेना॥
(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 30 से पूर्व, चौपाई 3 का पूर्वार्ध; कैकेयी का दशरथ से कथन।)

"तौ साँच की दुहाई देके दूसरे को दुख भी दओ जा सकत है, पुष्पा बोलीं। बचन तुम देओ, बन में बेटा जाए! जाखों दुख है, उखों भी पूछो।"

उनकी आपत्ति आज के निर्णय की थी। तुलसी के प्रसंग में राम स्वयं वचन की मर्यादा स्वीकारते हैं। लौटने का आग्रह करते सुमंत्र से कहते हैं:–

धरमु न दूसर सत्य समाना।आगम निगम पुरान बखाना॥
(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 95 से पूर्व, चौपाई 3 का पूर्वार्ध; राम-सुमंत्र संवाद।)

दशरथ की निष्ठा का मूल्यांकन तुलसी यहाँ भी करते हैं:–

तुलसी जान्यो दसरथहिं धरमु न सत्य समान।
रामु तजे जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्रान॥
(दोहावली, दोहा 219; दशरथ का सत्यधर्म।)

यहाँ भय और लाभ की आशा परामर्श बिगाड़ते हैं। हमारे सामने रोजी खोने का डर था। पदवान की बात सहज स्वीकार ली जाए और श्रमिक से बार-बार प्रमाण माँगा जाए तो सत्य तक पहुँचने की सामाजिक व्यवस्था ही पक्षपाती हो जाती है।

मैंने कहा, "इनसे वचनभंग की सुविधा निकालना मूल आशय पलटना होगा। हमारी परिस्थिति में प्रश्न यह है कि संकल्प लेते समय विवेक कहाँ था और उसके निर्वाह का भार किस पर पड़ेगा। सत्य की प्रतिष्ठा चाहने वाला दूसरों की कीमत पर केवल अपनी प्रतिज्ञा की उज्ज्वलता तो नहीं बचा रहा?"

"अउ अपनी कही गलत बात सुधारो, तौ ऊ बचन से फिरबो भओ का?"

"वचन में किसी कर्म का दायित्व लिया जाता है; आरोप में किसी घटना के बारे में दावा होता है। पहला निभाने के लिए अपने आचरण को प्रतिज्ञा के अनुरूप करना है; दूसरे में कथन को उपलब्ध प्रमाण के अनुरूप करना है। भूल सुधारना यहाँ सत्यनिष्ठा का निर्वाह होगा।"

पुष्पा ने मोहन का उत्तर याद दिलाया। मैंने उससे पूछा था, 'गुस्सा आया होगा?' उसने कहा था, "आया था। रोज इन्हीं घरों में काम करना है।"

सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास॥
(रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड, दोहा 37; रावण के चापलूस सलाहकारों के प्रसंग में कवि का कथन।)

यहाँ भय और लाभ की आशा परामर्श बिगाड़ते हैं। हमारे सामने रोजी खोने का डर था। पदवान की बात सहज स्वीकार ली जाए और श्रमिक से बार-बार प्रमाण माँगा जाए तो सत्य तक पहुँचने की सामाजिक व्यवस्था ही पक्षपाती हो जाती है।

"अउ साँच सुनबे को धरम किसको है?" पुष्पा ने पूछा। राम पुरजनों से कहते हैं:–

जौं अनीति कछुभाषौं भाई। तौंमोहिबरजहु भय बिसराई॥
(रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा 43 से पूर्व, चौपाई 3 का उत्तरार्ध; राम का पुरजनों से कथन।)

'मोहि बरजहु' में शासक अपने निर्णय को टोकने का अधिकार देता है। आज इसे बरतें तो आपत्ति सुनी जाए, तथ्य मिलने पर निर्णय सुधरे और कहने वाला प्रतिशोध से सुरक्षित रहे। सच बोलने वाले की प्रशंसा करके उसकी पूरी कीमत उसी के परिवार पर छोड़ देना हमारी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता।

मिथ्या माहुर सज्जनहि खलहि गरल सम साँच।
तुलसी छुअत पराइ ज्यों पारद पावक आँच॥
(दोहावली, दोहा 339; मिथ्या और सत्य के प्रति विपरीत प्रवृत्तियाँ।)

झूठ से घृणा और अप्रिय सत्य से पलायन मनुष्य की प्रवृत्ति पहचानने में सहायक हैं। फिर भी एक भूल से किसी को 'खल' घोषित कर देना उसी उतावली में लौटना होगा जिसकी हम जाँच कर रहे थे।

"तौ पहिचान ई भी है कि साँच सामने आवै, तब आदमी का करै", पुष्पा ने कहा। "हमाई बात गलत निकरै तौ हम मानें; दूसरे सेई सारी सहनशीलता काहे माँगें?"

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
(रामचरितमानस, लंकाकाण्ड, दोहा 80 से पूर्व, चौपाई 3 का पूर्वार्ध; राम का विभीषण को धर्मरथ-वर्णन।)

'सत्य के साथ शील है', मैंने कहा। "सही बात कहने वाला भी दूसरे का अपमान करके आनंद लेने लगे तो अपने आचरण की परीक्षा से बच नहीं सकता।"

की मुख पट दीन्हे रहैंजथा अर्थ भाषंत। तुलसी या संसारमें सो बिचारजुत संत॥
बोलै बचन बिचारि कैलीन्हें संत सुभाव। तुलसी दुख दुर्बचन के पंथ देत नहिं पाँव॥
वैराग्यसंदीपनी, दोहे 11-12; विचारपूर्वक बोलने का संतस्वभाव।

"पर जाँच पूरी होय तबई बोलो, तौ जाके संग बुरो भओ, ऊ कब बोलै?"

"अपनी पीड़ा कहने और सहायता माँगने के लिए सारे प्रमाण जुटाना शर्त नहीं। जो मालूम है, उसे कहें; संदेह को संदेह कहें। आरोपित का उत्तर भी सुना जाए, लेकिन उसके इनकार से शिकायत खारिज नहीं होती।"

पुष्पा ने सरयू की ओर देखा। "बब्बा जगत को झूठो भी कहत हैं। फिर ई साँच कहाँ टिकै?"

झूठो है, झूठो है, झूठो सदा जगु, संत कहंत जे अंतु लहा है।
(कवितावली, उत्तरकाण्ड, इस आरम्भ वाला सवैया, पहली पंक्ति; गीताप्रेस, 2017, पृ. 91।)

कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोउ मानै।
तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम, सो आपन पहिचानै॥
विनयपत्रिका, पद 111, अंतिम पदांश; 'केसव! कहि न जाइ का कहिये' में जगत और आत्मबोध का प्रश्न।

"यहाँ जगत की परम वास्तविकता, मोह और आत्मपहचान का विचार है। मोहन ने डाल काटी या गिरी डाल हटाई, इसकी जाँच दूसरे स्तर की है। संसार की नश्वरता से उसकी रोजी और अपमान का दुख निरर्थक नहीं हो जाता।"

उस दिन पड़ोसी ने पहले लिखा था, 'कुछ गलतफहमी हो गई थी।' उससे आरोप किसने लगाया, किस पर लगाया, सब छिप गया था। फिर उन्होंने साफ लिखा कि गिरी डाल काटते देखकर मोहन पर पेड़ से डाल काटने का गलत आरोप लगाया था; पहला संदेश वापस लेते हैं। पढ़ते हुए मोहन की उँगली अपने नाम पर ठहरी थी।

"अपने लिखे में सुधार बब्बा ने भी माँगे हैं", पुष्पा बोलीं।

यह बिराग संदीपनी सुजन सुचित सुनि लेहु।
अनुचित बचन बिचारि के जस सुधारि तस देहु॥
(वैराग्यसंदीपनी, दोहा 62; ग्रंथ के अंत में सुजनों से कवि का निवेदन।)

घाट पर एक परिवार अपने साथियों की बाट जोह रहा था। हम भी ठिठके। मोहन को भेजा गया सुधार कितनों ने पढ़ा होगा, हम नहीं जानते थे। जहाँ आरोप पहुँचा, वहाँ उसका खंडन पहुँचाने का श्रम बाकी था। सार्वजनिक आरोप लगाने वाला अपने कथन के आधार और परिणाम, दोनों का उत्तरदायी है। तथ्य जाँचना, अनिश्चितता बताना, उत्तर सुनना और भूल उजागर होने पर स्पष्ट सुधार करना इसी दायित्व के अंग हैं। हमारे कथन से किसी की साख घटी हो तो उसे लौटाने का प्रयत्न भी हमें करना होगा।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

भारतीय परंपरा, राष्ट्रीय स्वाभिमान और सामाजिक संगठन के विचार का ऐतिहासिक संगम

विजयदशमी, संघ स्थापना और राष्ट्र चेतना का संकल्प

वासुदेव देवनानी

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में कुछ तिथियां केवल कैलेंडर का हिस्सा नहीं होतीं, वे विचार और संकल्प की प्रतीक बन जाती हैं। विजयदशमी ऐसी ही एक तिथि है। भगवान श्रीराम की रावण पर विजय और देवी दुर्गा की महिषासुर पर विजय से जुड़ा यह पर्व धर्म, न्याय, साहस और मर्यादा की प्रतिष्ठा का संदेश देता है। इसी दिन 27 सितंबर 1925 को नागपुर में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की।

इस चयन को केवल एक धार्मिक पर्व के साथ संगठन के जन्म का संयोग मानकर छोड़ देना पर्याप्त नहीं होगा। संघ की वैचारिक परंपरा में विजयदशमी का अर्थ आत्मविश्वास, संगठन और राष्ट्रीय पुनर्जागरण के संकल्प से भी जोड़ा जाता है।

पर्व से प्रेरणा तक :-भारतीय समाज में त्योहार सामाजिक जीवन को जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम रहे हैं। वे पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक संवाद स्थापित करते हैं और जीवन-मूल्यों को लोकपरंपराओं के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं। विजयदशमी का संदेश विशेष रूप से इस बात पर केंद्रित है कि शक्ति का उपयोग मर्यादा की रक्षा के लिए होना चाहिए और किसी भी उपलब्धि के साथ नैतिक जिम्मेदारी जुड़ी होती है।

डॉ. हेडगेवार ने जिस समय संघ की स्थापना की, उस समय भारत औपनिवेशिक शासन के अधीन था। स्वतंत्रता की आकांक्षा व्यापक हो रही थी, किंतु समाज में अनेक प्रकार के विभाजन और संगठन संबंधी चुनौतियां भी मौजूद थीं। संघ के संस्थापक ने सामाजिक संगठन और अनुशासित स्वयंसेवक निर्माण को राष्ट्रीय जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना।

राष्ट्र चेतना का अर्थ :- राष्ट्र चेतना केवल देश के प्रति भावनात्मक लगाव का नाम नहीं है। इसमें नागरिक कर्तव्य, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, कानून का सम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्व और संकट के समय सामूहिक सहयोग की भावना भी शामिल है।

संघ की शाखा व्यवस्था इसी उद्देश्य से विकसित की गई कि लोग नियमित रूप से मिलें, एक-दूसरे के साथ कार्य करना सीखें और व्यक्तिगत हित से आगे बढ़कर सामाजिक दायित्व के प्रति जागरूक हों। संघ की विचारधारा में सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता को परस्पर जुड़ा हुआ माना जाता है।लेकिन आधुनिक लोकतंत्र में राष्ट्र चेतना की व्यापकता का परीक्षण इस बात से भी होता है कि देश की विविध भाषाओं, आस्थाओं और समुदायों के लोग उसमें अपना समान स्थान अनुभव करते हैं या नहीं। राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आत्मबोध तभी स्थायी बनते हैं, जब वे परस्पर सम्मान और समान नागरिक अधिकारों के साथ आगे बढ़ें।

सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक भारत :-भारत की संस्कृति किसी एक कालखंड की रचना नहीं है। इसमें वैदिक और उपनिषदिक परंपराओं, बौद्ध-जैन विचारों, भक्ति और सूफी धाराओं, लोककलाओं, क्षेत्रीय भाषाओं तथा अनेक सामाजिक आंदोलनों का योगदान है। इसकी जीवंतता का कारण विभिन्न परंपराओं का संवाद और समय के साथ स्वयं को बदलने की क्षमता भी रही है। संघ की सांस्कृतिक दृष्टि भारतीय सभ्यतागत विरासत और हिंदू पहचान पर विशेष जोर देती है। समर्थकों के अनुसार, इससे समाज में सांस्कृतिक आत्मविश्वास और संगठन की भावना को बल मिला है। आलोचकों का मत है कि इस दृष्टि को सभी समुदायों की समान भागीदारी और भारत के बहुलतावादी स्वरूप के संदर्भ में निरंतर परखना आवश्यक है।

यह बहस इस बात की याद दिलाती है कि सांस्कृतिक गौरव का उद्देश्य अतीत की उपलब्धियों का स्मरण भर नहीं, बल्कि वर्तमान में न्यायपूर्ण और जिम्मेदार समाज का निर्माण भी होना चाहिए।

विजय का वास्तविक अर्थ :-विजयदशमी का सबसे गहरा संदेश आत्मविजय है। रावण के दस सिरों को प्रतीकात्मक रूप से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार और अन्य मानवीय कमजोरियों से जोड़कर भी देखा जाता है। यह व्याख्या हमें बताती है कि बाहरी विजय से पहले अपने भीतर की दुर्बलताओं को पहचानना जरूरी है। संगठन भी इसी नैतिक कसौटी पर सार्थक होता है। अनुशासन के साथ संवेदनशीलता, शक्ति के साथ संयम, राष्ट्रप्रेम के साथ मानवीय गरिमा और परंपरा के साथ विवेक हो, तभी सामूहिक प्रयास समाज को मजबूत बना सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होना केवल एक संगठन की ऐतिहासिक यात्रा का पड़ाव नहीं, बल्कि राष्ट्र चेतना के विचार पर विमर्श का अवसर भी है। यह अवसर पूछता है कि भारत की एकता को किस प्रकार सुदृढ़ किया जाए, सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक कैसे पहुंचाया जाए और विकास की यात्रा में किसी नागरिक को पीछे न छूटने देने के लिए क्या किया जाए।

विजयदशमी का संकल्प तभी जीवंत होगा, जब विजय का उत्सव आत्ममंथन से जुड़ेगा और राष्ट्र के प्रति प्रेम, समाज के प्रति सेवा तथा प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सम्मान में अभिव्यक्त होगा।

–वासुदेव देवनानी,
राजस्थान विधानसभा के माननीय अध्यक्ष हैं)।

विकसित भारत के लिए शिक्षा

डॉ. अरुणा व्यास

शिक्षा ही सर्वांगीण विकास की सबसे बड़ी राह है। भविष्य की उदात्त दृष्टि को यदि सफल होते देखना है तो शिक्षा ही उसकी सुगमता है। आजादी के सौ वर्ष पूर्ण होने पर विकसित भारत 2047 की जो संकल्पना देश में संजोई गई है, उसकी पूर्ति देश के शैक्षिक ढांचे को सुदृढ करके की ही की जा सकती है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये देश में उच्च शिक्षा नियामक व्यवस्था का पुनर्गठन करते हुए विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान ( ) विधेयक, 2025 की पहल महत्वपूर्ण है। भारत में शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के साथ इसके अंतर्गत हमारी वैश्विक शिक्षा प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करने पर जोर दिया गया है।

यह महत्वपूर्ण है कि इस विधेयक के अंतर्गत शिक्षा में विश्व-स्तरीय घरेलू अवसर उपलब्ध कराकर तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभाओं को आकर्षित कर प्रतिभा पलायन को रोकने की महती दृष्टि संजोई गई है। अभी स्थित यह है कि देश में उच्च, तकनीकी और चिकित्सा शिक्षा के अंतर्गत अध्ययन करने वाले बहुत सारे विद्यार्थी अपने देश में पढ़कर विदेशों में सेवाएं देते हैं। विश्व की तीसरी सबसे बड़ी उच्च शिक्षा प्रणाली होने के बावजूद शिक्षा नामांकन के मामले में 146 देशों में भारत 129वें स्थान पर है। यह स्थिति चिंताजनक तो है ही, हमारी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती है। शिक्षा अधिष्ठान विधेयक के अंतर्गत सम्मिलित नवाचारों का व्यावहारिक क्रियान्वयन जरूरी है। अभी हमारे विश्वविद्यालय विश्व स्तर पर बहुत नीचे के पायदान पर हैं। ज्ञान परम्परा के अंतर्गत विश्वविद्यालयों को समृद्ध किए जाने की सोच ठीक है परन्तु जब तक विश्वविद्यालयों को विश्व-स्तर से जुड़े आयामों से नहीं जोड़ा जाएगा, वे बहुत अधिक योग्य मानव संसाधन प्रदान नहीं कर पाएंगें। इसलिए जरूरी है कि वहां ऐसे पाठ्यक्रम और कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम निरंतर संचालित किए जाएं जिनसे विद्यार्थी समय के अनुकूल और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बने रह सकें।

शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। अत: विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबन्धन करना चाहिए। श्रेष्ठ शिक्षा के साथ एकीकृत ऐसी शिक्षा प्रणाली हमारे यहां बने जिससे वैश्विक स्तर पर शिक्षा का लाभ विद्यार्थी को मिले। यह सच है, हमारे विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए विदेशी छात्र-छात्राओं का आकर्षण तभी होगा जब वे श्रेष्ठतम ज्ञान केन्द्र बनेंगे। जह यहां का शिक्षा का स्तर को बढ़ेगा। शिक्षा में शोध और अनुसंधान की मौलिक दृष्टि विकसित की जाएगी। अमेरिका, यूके, जापान, जर्मनी, सिंगापुर, साउथ कोरिया आदि देशों की शिक्षा प्रणालियों इस समय बेहतरीन मानी जाती है। वहां कैसे और किसी तरह से विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है, इसका अध्ययन जरूरी है। विश्वविद्यालयों को चाहिए कि वे विश्व के टॉप रैंकिंग वाले विश्वविद्यालयों की तर्ज पर अपने यहां पाठ्यक्रमों और पढ़ाई के आधुनिक तकनीक का विकास करें।

गांव और शहर का भेद मिटाते हुए देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वजनिकरण के लिए तेजी से काम करने की आवश्यकता है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबके प्रयास के अंतर्गत भारत को 2047 में विकसित राष्ट्र बनाने की जो दृष्टि संजोई गई है, उसका आधार सप्तर्षि सिद्धांत मान गए हैं। यह सिद्धान्त हैं-समावेशी विकास; अंतिम छोर तक विकास की पहुंच, बुनियादी ढाँचा और प्रभावी निवेश, कौशल विकास, पर्यावरण संरक्षण के साथ विकास, युवा शक्ति का देश के विकास के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतरीन उपयोग और वित्तीय क्षेत्र को सुदृढ करते हुए राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का बेहतर प्रबंधन। शिक्षा इस सबका मूलाधार है। शैक्षिक उन्नयन यदि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता बनेगा, तभी हम विकसित भारत के संकल्प को प्रभावी रूप में क्रियान्वित कर पाएंगें।

–डॉ. अरुणा व्यास,
लेखिका।

लॉस एंजिल्स ओलम्पिक की ओर बढ़ती मंजू की साइकिल

राजस्थान की साइक्लिंग प्रतिभाओं को मिला खेल जगत का बड़ा प्रोत्साहन

अनीशा सहारन

बालोतरा की मंजू चौधरी से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाले साइकिल चालकों तक राजस्थान की साइक्लिंग की कहानी एक व्यापक खेल बदलाव को दर्शाती है-जिसे प्रतिभा खोज, बुनियादी ढांचे, वित्तीय सहायता और एथलीट कल्याण में बढ़ते निवेश का मजबूत समर्थन हासिल है। मंजू का सपना 2028 लॉस एंजिल्स ओलम्पिक में देश का प्रतिनिधित्व करना और मेडल जीतना है। वहां लड़कियों के लिए साइक्लिंग स्पर्धाओं में 11 गोल्ड दांव पर होंगे। 2007 में जन्मी युवा मंजू चौधरी के लिए यह सफर पहले से ही पदकों की एक असाधारण झड़ी लगा चुका है। उन्होंने रोड, ट्रैक, स्कूल, यूनिवर्सिटी और खेलो इंडिया प्रतियोगिताओं में नौ राष्ट्रीय स्तर के पदक-एक स्वर्ण, चार रजत और चार कांस्य-जीते हैं। उनकी उपलब्धियों में खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 में इंडिविजुअल टाइम ट्रायल में स्वर्ण पदक, 2025 नेशनल रोड साइक्लिंग चैंपियनशिप में 60 किलोमीटर मिक्स्ड टीम रिले में रजत पदक, नेशनल ट्रैक साइक्लिंग चैंपियनशिप में ओम्नियम में कांस्य पदक और 2026 अस्मिता विमेंस साइक्लिंग लीग में जूनियर महिला कीरिन में कांस्य पदक शामिल हैं। फिर भी मंजू की कहानी उनके मेडलों की अलमारी से कहीं बढ़कर है। भजनलाल शर्मा सरकार के नेतृत्व में, जमीनी स्तर पर खेल प्रतिभाओं की पहचान करने, बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, वित्तीय सहायता प्रदान करने और ऐसे रास्ते बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसके माध्यम से युवा एथलीट उच्च स्तर की प्रतियोगिताओं की ओर आगे बढ़ सकें। साइक्लिंग जैसे खेल के लिए यह दृष्टिकोण विशेष रूप से मूल्यवान साबित हो सकता है।

साइक्लिंग की महंगी हकीकत-

मंजू का अपना सफर प्रतिस्पर्धी साइक्लिंग के दूसरे पहलू को भी उजागर करता है। वह बीकानेर में अपने गुरु जेठाराम के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण लेती हैं, जहां उनकी दैनिक रोड-ट्रेनिंग लगभग 60-90 किलोमीटर तक होती है और साप्ताहिक लंबी राइड लगभग 100-120 किलोमीटर तक पहुंच जाती है। लेकिन एक एथलीट के प्रशिक्षण शुरू करने से पहले ही, उपकरणों का एक बड़ा सवाल सामने आता है।

मंजू की प्रतिस्पर्धी साइकिल की मूल कीमत 2.35 लाख थी। उनके गुरु जेठाराम के अनुरोध पर विक्रेता इसे 1.36 लाख में देने पर सहमत हुए और बाकी रकम को सामाजिक उपकार समर्थन मान कर अपना योगदान दिया। एक साइकिल खिलाड़ी को कम से कम दो साइकिलों की आवश्यकता होती है-एक प्रशिक्षण के लिए और दूसरी प्रतियोगिता के लिए। इससे उच्च स्तरीय प्रतियोगिता के लिए 8-10 लाख तक के उपकरण आवश्यक हो जाते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के एथलीट के लिए यह एक बहुत बड़ी बाधा है और फिर भी मंजू ने प्रतिस्पर्धा करना जारी रखा है। इसलिए उनकी कहानी यह दर्शाती है कि एक व्यापक खेल इकोसिस्टम क्यों मायने रखता है। वित्तीय सहायता, उपकरणों की मदद, गुणवत्तापूर्ण कोचिंग और प्रशिक्षण सुविधाओं तक पहुंच यह तय कर सकती है कि होनहार एथलीट आगे बढ़ेंगे या प्रतिस्पर्धी खेल से गायब हो जाएंगे।

जेठाराम वर्तमान में लगभग 40 साइकिल चालकों को मेंटर कर रहे हैं। इस समूह में ऐसे साइकिल चालक शामिल हैं जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा की है, जबकि लगभग सात अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता तक पहुंचे हैं। यह एक महत्वपूर्ण बात की ओर इशारा करता है। राजस्थान की साइक्लिंग चुनौती शायद प्रतिभा की कमी नहीं है बल्कि उस प्रतिभा के चारों ओर एक मजबूत रास्ता बनाने की आवश्यकता है।

मंजू का यह जूनून, भजनलाल सरकार का साथ और ईश्वर की कृपा उसे कार्सन वेलोड्रोम, जहां लॉस एंजिल्स ओलम्पिक साइक्लिंग ट्रैक स्पर्धाएं होंगी, में गोल्ड मैडल दिलाए, यह मेरा विश्वास भी है, प्रार्थना है। विश्वास एक साइक्लिंग खिलाड़ी का, जिसने अपने खेल कॅरियर में मंजूओं के सपनों को संसाधन, प्रोत्साहन और उचित वातावरण के अभाव में पोडियम से पहले, यहां तक कि ट्रैक से पहले टूटते बिखरते देखा है, महसूस किया है, जिया है।

–अनीशा सहारन,
नेशनल साइक्लिंग चैम्पियनशिप में सिल्वर मैडल विजेता व डीआईपीआर में यंग मीडिया सहायक।

राशिफल रविवार 18 अक्टूबर, 2026

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत-2083, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र दिन 12:44 तक, सुकर्मा योग रात्रि 12:56 तक, वणिज करण प्रात: 8:29 तक, चन्द्रमा आज सायं 7:33 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-धनु, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज राजयोग सूर्योदय से प्रात: 8:29 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 12:49 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रात: 8:29 से रात्रि 9:40 तक रहेगी। आज महा सप्तमी, त्रिदिनात्मक दुर्गा पूजन आरम्भ है। आज सप्तमी तिथि में वृद्धि हुई है। आज अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रात: 8:29 से है। सरस्वती बलिदान दिन 12:49 के बाद है।

श्रेष्ठ चौघड़िया– चर 7:57 से 9:22 तक, लाभ अमृत 9:22 से 12:12 तक, शुभ 1:37 से 3:02 तक

राहुकाल– 4:30 से 6:00 तक, सूर्योदय 6:31, सूर्यास्त 5:52

मेष
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आज नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

धनु
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्